

दुआ-6**दुआए सुबह व शाम****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

सब तारीफ उस अल्लाह के लिये हैं जिसने अपनी क़वत व तवानाई से शब व रोज को खल्क फ़रमाया और अपनी कुदरत की कारफ़रमाई से उन दोनों में इम्तियाज कायम है और उनमें से हर एक को मुअय्यना हुदूद व मुकर्ररा औकात का पाबन्द बनाया। और उनके कम व बेश होने का जो अन्दाज़ा मुकर्रर किया उसके मुताबिक़ रात की जगह पर दिन और दिन की जगह पर रात को लाता है ताके इस ज़रिये से बन्दों की रोज़ी और उनकी परवरिश का सरो सामान करे। चुनान्चे उसने उनके लिये रात बनाई ताके वह उसमें थका देने वाले कामों और खस्ता कर देने वाली कलफ़तों के बाद आराम करें, और उसे परदा उसे करार दिया ताके सुकून की चादर तानकर आराम से सोएँ और यह उनके लिये राहत व निशात और तबई क़वतो ंके बहाल होने और लज़्जत व कैफ़ अन्दोज़ी का ज़रिया हो और दिन को उनके लिये रौशन व रख़्शाँ पैदा किया ताके इसमें कार-व-कस्ब में सरगर्मे अमल होकर) इसके फ़ज़ल की जुस्तजू करें और रोज़ी का वसीला ढूँढें और दुनियावी मुनाफ़े और उखरवी फ़वाएद के वसाएल तलाश करने के लिये उसकी ज़मीन में चलें फ़रीं। इनत माम कारफ़रमाइयों से वह उनके हालात सँवारता और उनके आमाल की जांच करता और यह देखता है के वह लोग इताअत की घड़ियों, फ़राएज़ की मंज़िलों और तामीले एहकाम के मौक़ों पर कैसे साबित होते हैं ताके बुरों को उनकी बदआमालियों की सज़ा और नेकोकारों को अच्छा बदला दे। ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ व तौसीफ़ है के तूने हमारे लिये (रात का दामन चाक करके) सुबह का उजाला किया और इसी तरह दिन की रोशनी से हमें फ़ायदा पहुंचाया और तलबे रिज़क के मवाक़े हमें दिखाए और इसमें आफ़ात व बल्लियात से हमें बचाया। हम और हमारे अलावा सब चीज़ें तेरी हैं । आसमान भी और ज़मीन भी और वह सब चीज़ें जिन्हें तूने इनमें फैलाया है, वह साकिन हूँ या मुतहर्रिक मुक़ीम हूँ या राहे नूर व फ़िज़ा में बलन्द हूँ या ज़मीन की तहों में पोशीदा, हम तेरे क़ब्ज़ए कुदरत में हैं और तेरा इक्तेदार और तेरी बादशाहत हम पर हावी है और तेरी मशीयत का मुहीत हमें घेरे हुए है, तेरे हुक्म से हम तसरूफ़ करते और तेरी तदबीर व कारसाज़ी के तहत हम एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ पलटते हैं। जो अम्र तूने हमारे लिये नाफ़िज़ किया और जो ख़ैर और भलाई तूने बख़्शी उसके अलावा हमारे इख़तेयार में कुछ नहीं है और यह दिन नया और ताज़ा वारिद है जो हम पर ऐसा गवाह है जो हमहवक़्त हाज़िर है। अगर हमने अच्छे काम किये तो वह तौसीफ़ व सना करते हुए हमें रूख़सत करेगा और अगर बुरे काम किये तो बुराई करता हुआ हमसे अलाहीदा होगा। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उस दिन की अच्छी रिफ़ाक़त नसीब करना और किसी ख़ता के इरतेका करने या सगीरा व कबीरा गुनाह में मुव्तिला होने की वजह से उसके चीँ ब जर्बी होकर रूख़सत होने से हमें बचाए रखना और उस दिन में हमारी नेकियों का हिस्सा ज़्यादा कर और बुराइयों से हमारा दामन ख़ाली रख। और हमारे लिये उसके आगाज़ व अन्जाम को हम्द व सपास, सवाब व ज़खीरए आख़ेरत और बख़िशश व एहसान से भर दे। ऐ अल्लाह! करामन कातेबीन पर (हमारे गुनाह क़लमबन्द करने की) ज़हमत कम कर दे और हमारा नामाए आमाल नेकियों से भर दे और

बद आमालियों की वजह से हमें उनके सामने रूसवा न कर। बारे इलाहा! तू उस दिन के लम्हों में से हर लम्हा व साअत में अपने खास बन्दों का खत व नसीब और अपने शुक्र का एक हिस्सा और फ़रिश्तों में से एक सच्चा गवाह हमारे लिये करार दे। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और आगे पीछे, दाहिने और बांये और तमाम एतराफ़ व जवानिब से हमारी हिफ़ाज़त कर ऐसी हिफ़ाज़त जो हमारे लिये गुनाह व मासियत से सद्दे राह हो। तेरी इताअत की तरफ़ रहनुमाई करे और तेरी मोहब्बत में सर्फ़ हो। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें आज के दिन आज की रात और ज़िन्दगी के तमाम दिनों में तौफ़ीक़ अता फ़रमा के हम नेकियों पर अमल करें, बुराइयों को छोड़ें, नेमतों पर शुक्र और सुन्नतों पर अमल करें, बिदअतों से अलग-थलग रहें और नेक कामों का हुक्म दें। और बुरे कामों से रोके, इस्लाम की हिमायत व तरफ़दारी करें, बातिल को कुचले और उसे ज़लील करें, हक़ की नुसरत करें और उसे सरबलन्द करें, गुमराहों की रहनुमाई, कमज़ोरों की एआनत और दर्दमन्दों की चाराजोई करें। बारे इलाहा! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और आज के दिन को उन तमाम दिनों से जो हमने गुजारे ज़्यादा मुबारक दिन और उन तमाम साथियों से जिनका हमने साथ दिया इसको बेहतरीन रफ़ीक़ और उन तमाम वक्तों से जिनके ज़ेरे साया हमने ज़िन्दगी बसर की इसको बेहतरीन वक्त करार दे और हमें उन तमाम मख़लूक़ात में से ज़्यादा राज़ी व खुशनूद रख जिन पर शब व रोज़ के चक्कर चलते रहे हैं और इन सबसे ज़्यादा अपनी अता की हुई नेमतों का शुक्रगुजार और उन सबसे ज़्यादा अपने जारी किये हुए एहक़ाम का पाबन्द और उन सबसे ज़्यादा उन चीज़ों से किनाराकशी करने वाला करार दे जिनसे तूने ख़ौफ़ दिलाकर मना किया है। ऐ खुदा! मैं तुझे गवाह करता हूँ और तू गवाही के लिये काफ़ी है और तेरे आसमान और तेरी ज़मीन को और उनमें जिन जिन फ़रिश्तों और जिस जिस मख़लूक़ को तूने बसाया है, आज के दिन और उस घड़ी और उस रात में और उस मुक़ाम पर गवाह करता हूँ के मैं इस बात का मोतरफ़ हूँ के सिर्फ़ तू ही वह माबूद है जिसके अलावा कोई माबूद नहीं। इन्साफ़ का कायम करने वाला, हुक्म में अद्ल मलहोज़ रखने वाला, बन्दों पर मेहरबान, इक्तेदार का मालिक और कायनात पर रहम करने वाला है और इस बात की भी शहादत देता हूँ के मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम तेरे खास बन्दे, रसूल और बरगुज़ीदाए कायनात हैं। उन पर तूने रिसालत की ज़िम्मेदारियां आयद की ंतो उन्होंने उसे पहुंचाया और अपनी उम्मत को पन्द व नसीहत करने का हुक्म दिया तो उन्होंने नसीहत फ़रमाई। हमारी तरफ़ से उन्हें वह बेहतरीन तोहफ़ा अता कर जो तेरे हर उस इनआम से बढा हुआ हो जो अपने बन्दों में से तूने किसी एक को दिया हो और हमारी तरफ़ से उन्हें वह जज़ा दे जो हर उस जज़ा से बेहतर व बरतर हो जो अम्बिया (अ0) में से किसी एक को तूने उसकी उम्मत की तरफ़ से अता फ़रमाई हो। बेशक तू बड़ी नेमतों का बख़शने वाला और बड़े गुनाहों से दरगुजर करने वाला और हर रहीम से ज़्यादा रहम करने वाला है लेहाज़ा तू मोहम्मद (स0) और उनकी पाक व पाकीज़ा और शरीफ़ व नजीब औलाद (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

इस दुआ का सरनामा “दुआए सुबह व शाम” है जिसमें इख़तेलाफ़े शब व रोज़ की करिशमासाज़ी, औकात की तब्दीली व तनव्वअ की हिकमत और कुदरत के इरादे व मशीयत की कार फ़रमाई का ज़िक़र फ़रमाया है और हुस्ने अमल, शुक्रे नेमत, इत्तेबाए सुन्नत, तर्के बिदअत, अम्मे बिलमारूफ़ व नही अनिल मुनकिर,

इस्लाम की तरफ़दारी व हिफ़ाज़त, बातिल की तज़लील व सरकोबी, हक़ की नुसरत रियायत, इरशाद व हिदायत में सरगर्मी और कमज़ोर व नातवाँ की ख़बरगीरी के लिये तौफ़ीक़े इलाही के शामिले हाल होने की दुआ फ़रमाई है ताके दुआ के तास्सुरात अमली इस्तेहक़ाम का पेशख़ेमा साबित हों और ज़िन्दगी के लम्हात मक़सदे हयात की तकमील में सफ़ हों।

यह औकात का तबद्दुल, तुलूअ व गुरुब का तसलसुल और सुबह के बाद शाम और शाम के बाद सपीदह सहर की नमूद और कार फ़रमाइए फ़ितरत की वह हसीन कारफ़रमाई है जो निगाहों के लिये हिज़ व कैफ़ और क़ल्ब व रूह के लिये सर्द रू निशात का सामान होने के अलावा बेशुमार मसालेह व फ़वाएद की भी शामिल है। चुनांचे शब व रोज़ की तअय्यिन महीनों और सालों का इन्ज़बात और कारोबार मईशत और आराम व इस्तराहत के औकात की हदबन्दी उसी से वाबस्ता है और फिर इसमें ज़िन्दगी की तस्कीन व राहत का भी सामान है क्योके वक़्त अगर हमेशा एक हालत पर रहता और लैल व नहार के सियाह व सफ़ेद वरक़ निगाहों के सामने उलटे न जाते तो तबीअतें बेकैफ़, दिल सेर और ज़िन्दगी के लिये दिलबस्तगी के तमाम ज़राए ख़त्म हो जाते और हुस्ने यकरंग आंखों में खटकने लगता और नगमा बे जेर व बमोबाल गोश हो जाता क्योके इन्सान की तनव्वोअ पसन्द तबीयत यक़सानी व यकरंगी की हालत से जल्द उकता जाती है इसलिये कुदरत ने इन्सानी तबीयत के ख़्वास के मुताबिक़ शब व रोज़ की तफ़रीक़ कायम कर दी ताके शाम के बाद सुबह और सुबह के बाद शाम का इन्तेज़ार ज़िन्दगी की ख़स्तगियों और इसकी मुसलसल उलझनों और परेशानियों से सहारा देता रहे चुनांचे कुदरत ने इख़्तेलाफ़े शब व रोज़ की मसलेहत की तरफ़ मुतवज्जोह करते हुए इरशाद फ़रमाया है। -

“अन जअल..... तशकोरून” (अगर खुदा तुम्हारे लिये क़यामत के दिन तक दि नहीं रखता तो अल्लाह के अलावा और कौन है जो तुम्हारे लिये रात लाता के तुम इसमें आराम करो। क्या तुम इतना भी नहीं देखते और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात और दिन करार दिये हैं ताके रात को आराम करो और दिन को इसका रिज़क़ तलाश करो ताके इसके नतीजे में तुम शुक्र अदा करो।)

इसी नज़्मे औकात का नतीजा है के जब सुबह नमूदार होती है और सूरज की ताबनाक किरनें फ़िज़ा में फैल कर कारगाहे हस्ती के गोशा गोशा को जगमगा देती हैं तो ख़ामोश व पुरसुकून फ़िज़ा में गहमा गहमी शुरू हो जाती है। परिन्दे आशियानों से हैवान भटों और खोओं से, कीड़े-मकोड़े बिलों और सूराखों से और इन्सान झोपड़ों और मकानों से निकल खड़े होते हैं। हरकत व अमल की दुनिया आबाद हो जाती है और हर सिन्फ़ अपने कार-व-कस्ब में मारुफ़ और अपने मशागेल में सरगर्मे अमल नज़र आने लगती है। परिन्दे फ़िज़ा में, हैवान ज़मीन के ऊपर से और कीड़े मकोड़े ज़मीन के अन्दर से अपनी रोज़ी ढूँढने लगते हैं। और च्यूंटियां भी अपनी मुख़्तसर जसामत के बावजूद सई पैहम व जेहद मुसलसल का वह मुजाहेरा करती हैं के इन्सानी अक्लें दंग रह जाती हैं धूप हो या साया, न मेहनत से जी चुराती हैं न मशक्कत से मुंह मोड़ती हैं और हर वक़्त दौड़ धूप करती और तलब व तलाश में मसरुफ़ नज़र आती हैं। गरज़ कायनात की हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी मख़लूक़ मेहनत व काविश को अपना दस्तूरे हयात बनाए हुए पेट पालने के लिये भाग दौड़ करती हैं और कमज़ोर से कमज़ोर हैवान भी यह गवारा नहीं करता के जब तक उसके हाथ पांव में सकत है, बेकार पड़ा रहे और अपने हम जिन्सों से भीक मांगे और

इनके आगे हाथ फैलाए। यह हैवानी सीरत इन्सानी गैरत के लिये एक ताज़ियाना है और इन्सान के लिये एक दाइयाए फ़िक्र है के जब हैवान इसकी सतह से कहीं पस्ततर होने के बावजूद सवाल में आर महसूस करता है तो वह अपने हम जिन्सों के आगे किस तरह हाथ फैलाना गवारा कर लेता है। इन्सानी बलन्दी का तक्राज़ा तो यह है के अपने कूवते बाज़ू से कमाए और सवाल की ज़िल्लत और एहतियाज की निकबत से इज़्जते नफ़्स पर हर्फ़ न आने दे।

वह अफ़राद जो तने आसानी की वजह से बेकार पड़े रहते हैं वह आराम व सुकून की हकीकी लज़्जत से यकसर महरूम रहते हैं। सच्ची राहत और असली सुकून तो मेहनत व मशक्कत के बाद ही हासिल होता है। साये की क़द्र व कीमत को वही जान सकता है जो सूरज की तमाज़त और धूप की तपिश में मसरूफ़े कार हो और ठण्डी हवा के झोंकों से वही कैफ़अन्दोज़ हो सकता है जो गर्मी व हिदत की शोलाबारियों में पसीने से शराबोर हो और रात के पुरसुकून लम्हात उसी के लिये सुकून व राहत का पैगाम साबित हो सकते हैं जिसका दिन मेहनत व जफ़ाकशी का हामिल हो। चुनांचे एक टोकरी ढोने वाला मज़दूर और चिलचिलाती धूप में हल चलाने वाला किसान जब दिन के कामों से फ़ारिग़ होता है तो फ़ितरत पूरी फ़राख़ हौसलगी से उसके लिये सरो सामाने राहत मुहय्या कर देती है। सूरज का चिराग़ गुल हो जाता है, चान्द की हल्की और ठण्डी शुआओं का शामियाना तन जाता है सितारों की क़न्दीलें टिमटिमाने लगती हैं, शफ़क़ के रंगीन परदे आवेज़ां हो जाते हैं। हरी भरी घास का मखमली फ़र्श बिछ जाता है, शाखें झूमकर मुर्दहे जन्बाती करती हैं और पते हवा के झोंकों से टकराकर फ़िज़ा के दामन को ख़्वाब और नग़मों से भर देते हैं और फ़र्श ज़मीन के ऊपर और शामियानाए फ़लक के नीचे सोने वाला रात की स्याह चादर ओढ़ कर आराम से सो जाता है क्या उसके मुकाबले में वह काहिल व आराम तलब जिसके हाँ नर्म व गुदाज़ गद्दे, आरामदेह मसहरियां, हवाएं, लहरें पैदा करने वाले बिजली के पंखे और आंखों को ख़ैरगी से बचाने वाले हल्के सब्ज़ रंग के क्रमक्रमे और दूसरे मसनूई व खुदसाख़ता सामाने आसाइश मुहय्या हों ज़्यादा पुरसुकून व पुरकैफ़ रात बसर कर सकता है? बहरहाल कारख़ानाए नीस्त व बूद की बू क़लमोनियां और फ़ितरत की तनव्वाएअ रअनाइयां इन्सान के हयात की तस्कीन और ज़िन्दगी की दिलबस्तगी व आसाइश का मुकम्मल सरो सामान लिये हुए हैं। लेकिन यह आलम के दिल आवेज़ नुकूश और राहत व आसाइश के सामान किस लिये हैं? क्या इसलिये हैं के इन्सान चन्द दिन खाए पिये, घूमे फ़िरे और फिर क़ब्र में जा सोए। अगर ऐसा हो तो ज़िन्दगी का कोई मक़सद ही नहीं रहता। हालांके दुनियाए कायनात की हर चीज़ का एक मक़सद और एक मुद्दा है तो फिर ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के सदो सामान बग़ैर मक़सद के क्योंकर हो सकते हैं, इसका भी कोई मक़सद होना चाहिये और वह मक़सद सिर्फ़ आख़ेरत की ज़िन्दगी है। जिसकी सआदतों और कामरानियों को हासिल करने के लिये दुनिया को एक ज़रिया और इम्तेहान गाह करार दिया गया है। चुनांचे इरशादे इलाही है- “वलाकिन ख़ैरात” (लेकिन जो उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हें आजमाना चाहता है लेहाज़ा नेकियों की तरफ़ बढ़ने में एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिष करो)

यह आजमाइश इसी सूरत में आजमाइश रह सकती है जब इन नेकियों पर अमलपैरा होने और इनमें सबक़त ले जाने में इन्सानी इख़्तियार का अमल दख़ल हो और अगर वह ईमान व अमले सालेह पर

मजबूर हो तो आजमाइश के मानी ही क्या ऐसी सूरत में तो हर एक को ईमान लाना पड़ता और आमाल बजा लाने पड़ते क्योंकि कुदरत अपनी बात के मनवाने में मजबूर व कासिर नहीं है चुनांचे इरशादे इलाही है- “व लौ शाअ..... जमीअन” (और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ज़मीन में बसने वाले सब के सब उस पर ईमान ले आते।)

बेशक कायनात का हर ज़रा उसकी मशीयत के ताबेअ है। इस तरह के कोई उसके महीते इक्तेदार से बाहर नहीं है। वह ज़मीन हो या उस पर चलने फिरने वाली मखलूक, पहाड़ हों या उनके दामन में मादनियात, दरया हों या उनमें रहने वाली मछलियां समन्दर हों या उनमें अम्बर, मूंगे और मोतियों के खजाने, फ़िज़ा हो या उसमें परवाज़ करने वाले परिन्दे, बादलों के लक्के हों या उनमें उमड़ते हुए पानी के जखीरे, चान्द सूरज हों या उनकी जौहरी शुआएं, सितारे हों या उनकी मखसूस तासीरें, फ़रिशते हों या उनकी सरगर्मियाँ सब ही तो उसकी मशीयत के अन्दर जकड़ी बन्धी हुई हैं। अगर इन्सान भी एतकाद व आमाल मे इसी तरह बेबस होता और मशीयत हर एक को एक मखसूस तरीकेकार का पाबन्द बना देती तो जज़ा व सज़ा बेकार हो जाती। हालांके कानूने मकाफात की रू से जज़ा व सज़ा से दोचार होना ज़रूरी है जैसा के इरशादे इलाही है- “लहा मा कसबत.....मकतसबत” (अगर उसने अच्छा काम किया तो अपने फ़ायदे के लिये और बुरा काम किया तो उसका वबाल उसके सर पड़ेगा)

तो जब अपने ही आमाल सामने आते हैं तो वही औकात व लम्हात ज़िन्दगी का सरमाया हैं जिनमें आमाल खैर के ज़रिये आखेरत का सरमाया महम पहुंचा लिया गया हो और वही शब व रोज़ मुबारक व मसऊद हैं जिनमें अखरवी हलाकत व तबाही से बचने का सामान कर लिया गया हो। यह दिन और यह रातें हमारे अच्छे और बुरे आमाल की निगरान हैं। अगर उनके सामने हमारी नेकियां आती हैं तो उनकी पेशानी की गिरहें खुल जाती हैं और उनके चेहरे पर मुस्कुराहट फैल जाती है और वह हमसे खुश खुश रूखसत होते हैं और अगर बुराइयों को देखते हैं तो उनकी जबीन पर शिकनें पड़ जाती हैं और बुराई करते हुए रूखसत होते हैं। चुनांचे हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम का इरशाद है-

“इन्सान की ज़िन्दगी का जो दिन गुज़रता है वह (जबाने हाल से) खिताब करते हुए उससे कहता है के मैं तेरे लिये नया दिन और तेरे आमाल का गवाह हूँ। लेहाज़ा ज़बान और आज़ा से नेक अमल करो, मैं उसकी क़यामत के दिन गवाही दूँगा।”

लेहाज़ा सुबह की पुरसुकून फ़िज़ा और सितारों की ठण्डी छाँव में आने वाले दिन का इस्तेक़बाल इस दुआ से किया जाए ताके कम अज़ कम इस दिन तो उसके तास्सुरात हमारी ज़िन्दगी पर छाए रहें और फ़िक्र व अमल की पाकीज़गी हमारे तसव्वुरात पर मोहीता रहे और यही इस दुआ का मरकज़ी नुक्ताए निगाह है।